शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-2.0
Vol.-2; issue-1 (Jan.-June) 2025
Page No- 86-91

©2025 Shodhaamrit (Online)
www.shodhaamrit.gyanvividha.com

डॉ. सुरिन्द्रपाल कौर
सहायक प्रोफेसर,
सेंटर फॉर डिस्टेंस एण्ड आनलाइन ऐजुकेशन, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, (पंजाब).

Corresponding Author :
डॉ. सुरिन्द्रपाल कौर
सहायक प्रोफेसर,
सेंटर फॉर डिस्टेंस एण्ड आनलाइन ऐजुकेशन, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, (पंजाब).

'उजास कहाँ है' कहानी संग्रह में नारी की स्थिति

नारी ईश्वर की सुंदर, कोमल एवं सहज कृति है। सुंदरता, कोमलता जैसी विशेषताओं के साथ भगवान् ने नारी को एक पावन हृदय भी दिया है। नारी के गुणों ने ही उसे पूज्नीय बनाया है। समाज में नारी के महत्व से इंकार नहीं किया जा सकता, वह समाज की आधारशिला है। परिवार में वह बेटी, बहन, पत्नी, बहू, मां के रुप में विभिन्न भूमिकाएँ निभाती है।

आधुनिक समय में नारी शिक्षित होकर जीविका अर्जित करने में पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी है। शिक्षा ने उसे अपनी पहचान बनाने के लिए एक मार्गदर्शन दिया है। सदियों से परंपराओं के नाम पर नारी का शोषण हुआ है किंतु आधुनिक नारी अपने ऊपर होने वाले प्रत्येक अत्याचार का विरोध करती है। अपने अधिकारों के प्रति सचेत नारी समाज में अपना अहम स्थान बनाने हेतु प्रयत्नशील है।

समाज में जो स्थान एक नारी का होना चाहिए वह उसको नहीं दिया जा रहा। विवाह से पहले वह पिता या भाई के नाम से जानी जाती है और विवाहोपरांत पति के नाम से। पुत्र होने पर पुत्र के नाम से जाना गया और उसका अपना अस्तित्व कहीं खो गया। समाज में नारी को उचित स्थान दिलवाने हेतु कई कानून भी बनाए गए हैं। भ्रूणहत्या, दहेज प्रथा, घरेलू हिंसा से महिलाओं की सुरक्षा, यौन शोषण निषेध इत्यादि से संबंधित विभिन्न कानून बनाए गए हैं। 'बावजूद इसके समाज में महिलाओं की स्थिति अनिश्चित है। उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य, घरेलू जीवन, राजनीतिक नेतृत्व, सार्वजनिक स्थलों पर विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।'

आज इस दिशा में परिवर्तन की आवश्यकता है और कुछ सीमा

तक नारी की स्थिति में सुधार आना शुरु भी हुआ है। सुशिक्षित नारी गुलामी की जंजीरों को तोड़कर अपना और समाज का विकास करने लगी है। उच्च ओहदों पर आसीन होकर अपना और अपने परिवार का नाम रोशन कर रही हैं। शिक्षित मां बनकर अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा प्रदान कर सुसंस्कृत समाज का निर्माण कर रही है। स्त्री-पुरुष संबंधों का भी समाज को प्रभावित करने में अहम स्थान है।

भारतीय हिंदी साहित्य में नारी की स्थिति को लेकर बहुत कुछ लिखा गया है। प्रेमचंद से लेकर आधुनिक समय तक नारी स्थिति, नारी से जुड़ी विभिन्न समस्याओं को लेकर कथा साहित्य की रचना हुई है। पुरुष लेखकों के साथ ही स्त्री लेखकों ने नारी स्थिति, नारी विमर्श को लेकर साहित्य में अपना विशेष स्थान दर्ज करवाया। आठवें दशक तक आते-आते हिंदी कथा साहित्य में नारी विमर्श के ज़ोर ने आंदोलन का रुप ले लिया। आठवें दशक की प्रमुख स्त्री लेखकों में ममता कालिया, चित्रा मुद्रल, मृदुला गर्ग, मंजुल भगत, मैत्रेयी पुष्पा, मृणाल पांडे, राजी सेठ, मंजुला राणा, प्रभा खेतान, सुधा अरोड़ा, नमिता सिंह, रमणिका गुप्ता इत्यादि ऐसे नाम हैं जिन्होंने नारी विषयक् विभिन्न पहलुओं, अंतर्द्वन्द्व, विभिन्न समस्याओं को बड़ी ही संजीदगी से प्रस्तुत किया है।

समाज की अटूट कड़ी होने के नाते नारी का अनेक रुपों में चित्रण कथा साहित्य में मिलता है। नारी जीवन के प्रत्येक पहलू को कहानीकारों ने अपनी कहानियों में विभिन्न ढंगों से प्रस्तुत किया है। इन कहानीकारों में एक नाम हैमंजुला राणा का। मंजुला राणा की कहानियों का केन्द्र बिंदु है समाज और नारी। समाज की विभिन्न समस्याओं और बुराइयों को कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत करने का कार्य मंजुला राणा जी ने बखूबी किया है।

'उजास कहाँ है' कहानी संग्रह की कहानियाँ लिखते समय इन्होंने समाज का यथार्थ चित्र कहानियों में उतारा है। 'निपूती' कहानी में बूढ़ी काकी के दो पुत्र हैं। गांव में सारे बूढ़ी काकी का बड़ा सम्मान करते हैं। "लोग सवेरे सुहागिनों को हिदायत देते की बूढ़ी काकी के दर्शन करने से सबकी को हरी हो जाती है।"[1] बेटे बड़े होते हैं और अपनी पसंद की शादी रचाते हैं। माता-पिता की सलाह लेना तो दूर उन्हें शादी में बुलाया तक नहीं। बड़े ने नर्स से ब्याह किया तो छोटा विदेश से 'मेम' ले आया। किंतु दोनों ही माता-पिता से दूर घर लेकर रहने लगे। वे छोटे की घर गृहस्थी देखने शहर जाते हैं तो दोनों को अपने बेटे का संस्पर्श नहीं मिलता। दोनों घर वापस लौटने की तैयारी करते हैं तो काकी पति से कहती हैं "सुनो बेटे को खबर तो कर दो कि हम जा रहे हैं। यह सुनते ही पति की सारी ज्वाला एक बारगी फूट पड़ती है। उस हरामजादे का नाम न लियो मेरे सामने। मर चुका है मेरे लिए। उसी मेम को माँ-बाप कहियो।"[2] पुत्रों से मिले अपार दुख के कारण बूढ़े माता-पिता अंदर से टूट जाते हैं। बूढ़ी काकी "रुंधे गले से बस इतना ही कह पाती है मास्टर जी, इससे अच्छा तो राम जी मुझे निपूती ही रहने देते।"[3]

बुढ़ापे में माता-पिता को अपने बच्चों के सहारे की आवश्यकता होती है, किन्तु बूढ़ी काकी और उनके पति जवान पुत्रों के होते हुए भी बुढ़ापे में अकेले रह जाते हैं और बुढ़ी काकी दूसरों को पुत्रों का आशीर्वाद लोग दिखावे के लिए दे तो देती है किंतु "मन ही मन सोचती, मेरे राम, इन्हें मेरी तरह लाल न देना, चाहे गोद खाली ही रहने देना।"[4] जिस मां ने अपना सारा प्यार व ममता पुत्रों पर न्यौछावर किया वो पुत्र माँ की ममता, त्याग को न समझे और जिंदगी के इस मोड़ पर उन्हें बेसहारा छोड़ दिया।

'खून का रंग' कहानी में स्त्री-पुरुष प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। पति अपनी पत्नी में सदैव खूबसूरती ही तलाशता है। कनवा अपनी पत्नी सुखनी से कहता

है "अरी सुखनी, तू अब उतनी खूबसूरत न रही रे, याद है तीस बरस पहले की लुनाई। धाक जमा दी थी तेरे यौवन ने।"[5] सुखनी भारत-पाक विभाजन के दौरान रिफ्यूजी कैंप की यातनाओं से तंग आकर कानवा के साथ ब्याह करवा लेती है और अच्छे घराने से होने के बावजूद भी भंगी का काम करने लगी थी। एक पुरुष के संग में उसे अपनी इज़्ज़त की हिफाज़त जो करनी थी। कानवा को एक सुंदर स्त्री मिल गई थी और क्या चाहिए था उसे। "कनवा को भी गर्व था कि अच्छे खानदान की होकर भी झाड़ू के संग खूब हिलमिल गई है जोरू... दस बच्चे एक साथ जो निकाल दिये मानों बक्से से उठाकर बाहर रखे हों ना कोई डाक्टर न चीरा टांके और शरीर वैसा ही गबरु जवान।" सुखनी की मालकिन तिवारिन को एक स्कूटर वाला टक्कर मार देता है, तो "सुखनी झाड़ू एक और फेंक कर झपटकर स्कूटर वाले की गर्दन पकड़ घसीटती चली गई। अरे निरमुहे! हमारी मालकिन को गिरा दिया, ऐसी ऊँची जात की लक्ष्मी ने तेरा क्या बिगाड़ा था।"[7] सुखिया तुरंत अपनी मालकिन को रिक्शे में डालकर डॉक्टर के पास ले जाती है और उसका इलाज करवाती है। मालकिन द्वारा की उसकी प्रताड़ना और जातिगत भेद-भाव को भुलाकर सुखिया उसके प्रति अपनी स्वामी भक्ति को दर्शाती है।

'आबरु' कहानी की अम्मा चकला चलाती थी। अपनी शागिर्द नीलिमा से उसे विशेष लगाव था। वह नीलिमा से कहती "खूब पिलाकर यो कर देना कि पट्टा छूना भी भूल जाये, बस आँखों ही आँखों का सौदा करना बेटी।"[8] अम्मा का यह रूप नीलिमा समझ ना पाती। वह कहती कि यदि वह उसकी बेटी होती तो क्या फिर भी वह उसे यूं किसी के आगे परोसती। यह बात अम्मा के मन को लग गई। अपने मन में एक फैसला किया अम्मा ने। "पेटजाई कहा था ना तूने और भीगी आँखों से उसे बग्गी की ओर चलता कर देती है।"[9] वास्तव में अम्मा नीलिमा को मदन नाम के एक लड़के को सौंप देती है, जो उससे शादी करके इज़्ज़त की जिंदगी देना चाहता था मदन उसकी मांग में सिंदूर भर देता है। नीलिमा सोचती है कि क्या 'वेश्या भी पत्नी बन सकती है यह कहकर वह अम्मा के पास जाने के लिए मदन बाबू की कोठी से भाग जाती है। अम्मा उसे मिलकर कहती है "उस दिन तूने कहा था ना बेटी की अम्मा अगर में तुम्हारी पेटजाई होती तो क्या... बस उसी दिन प्रतिज्ञा कर ली थी बुढ़िया ने। घर बसाकर ही छोड़ेगी तेरा, तूने मेरी रुह को हिला दिया था। कसम खा ली थी मैंने, पेटजाई का धर्म निभा रही हूँ।"[10] अम्मा बोझल मन और भीगी आँखों से दोनों को कोठी से बाहर करके दरवाजा बंद कर देती है। इस प्रकार एक स्त्री माँ ना होते हुए भी माँ का कर्तव्य निभाकर एक लड़की का जीवन संवार देती है।

'सिरहन' में वैशाली की शादी जतिन से बड़ी धूमधाम से संपन्न हुई और मात्र उन्नीस दिन में एक दुर्घटना में उसके पति की मृत्यु हो गई। वैशाली के जीवन में अंधकार भर गया। उसकी स्तब्ध आँखें शून्य में खो गयी। बेटी के दुख से टूट कर पिता भी चल बसे। यह दूसरी चोट उसके लिए वज्रपात से कम नहीं थी। "समय के लंबे पड़ाव ने वैशाली की चेतना को संभाला लम्हा लम्हा वह अपने अतीत को भूलने का यत्न करने लगी।"[11] और एक प्राथमिक विद्यालय की आदर्श अध्यापिका के रुप में प्रतिष्ठित हो गई। अपने दुखों के पहाड़ को झेलने के साथ-साथ वह समाज के दुखी, पीड़ितों की सहायता भी करती। यह उसकी विरासत थी। उसने अपनी सारी धन-दौलत अनाथालय को सौंप दी और आत्मनिर्भर बनकर समाज सेवा में अपना जीवन लगा दिया।

'शहादत' कहानी की माँ का इकलौता पुत्र सेना में भर्ती होकर शहादत प्राप्त करता है। पति और पुत्र की मृत्यु से माया के सिर पर दुखों का पहाड़ ही

टूट गया किंतु "माया ने माँ होकर भी हिम्मत नहीं हारी और खुद बेटे की शव-यात्रा में शामिल हुई थी।"[12] शहादत के बाद ड्राइंग रूम के बीचो-बीच छह फुट लंबी आदमकद फोटो पर हर कोई प्रणाम करता था। अब उसका पुत्र उसके पास नहीं था। बिल्कुल अकेली हो गई थी माया। पति और पुत्र की यादों के अलावा अब कुछ नहीं था उसके पास। बेटे की शादी का सपना सपना ही बनकर रह गया था। पंडित जी ने बताया भी था कि बेटे पर घोर संकट आने वाला है। माँ ने दान-दक्षिणा से इस संकट को टालने के बड़े प्रयास किए थे किंतु जो ईश्वर को मंजूर था। पुराने दिनों को याद करके माया सुन्न हो जाती थी। "अचानक अंदर से हूक उठती है और उसे उकरकर खड़ा कर देती है। करंट् सा लगता है उसे। तत्काल अन्तर्ध्वनि आती है तेरा बेटा तो देश के काम आया है। उसके गम में रोना तो उसके समर्पण को निरर्थक कर देगा। माया! तू साधारण औरत नहीं, तू तो शाहीद की माँ है।"[13]

माँ धैर्य रखकर अपने बेटे द्वारा बच्चों का स्कूल बनाने का सपना पूरा करने में जुट जाती है। साहस और ममता का नाम था माया। धन्य हो जाती है वह धरती, जहाँ माँ स्वयं कंधा देकर बेटे की अंतिम यात्रा तक विदा करती है। धन्य है उस माँ का बलिदान।

'बंधी कोख' में शगुन की शादी राघवशरण से होती है। राघवशरण की पहली पत्नी से चार बच्चे थे। शगुन का सपना था कि वह अपनी कोख से बच्चे को जन्म दे। यह सपना प्रत्येक नारी का होता है। एक दिन अपने मन कीबात वह अपने पति से करती है "उसे भी एक बच्चा चाहिए। जो मेरा जाया हो। मुझे माँ कहें। एक हूक उसके मन में उठ गयी। राघव बहुत समझाता आखिर ये भी तो तुम्हारे ही हैं। मैंने इन्हीं के लिए तुम्हें अपनाया है... मैंने तो छोटी गुड़िया के बाद अपना ऑप्रेशन करवा लिया था।"[14] माँ बनने की ममता और इच्छा होने के बावजूद अब शगुन कभी माँ नहीं बन सकती थी। उसकी कोख अब हमेशा के लिए बंध गई थी। एक स्त्री का सबसे सुंदर सपना होता है माँ बनना, किन्तु शगुन के सपने का क्या?

'सिन्दूर' कहानी में रीता अमीर परिवार की बेटी थी, जिसे अमर से प्रेम हो जाता है। अमर भी रीता को चाहता था किन्तु गरीब परिवार का होने से अपनी भावनाओं को अपने अंदर ही संजोए रखता है। अमर और रीता का विवाह हो जाता है। आतंकवादी हमले में अमर की मृत्यु हो जाती है किन्तु अमर की यादों का तोहफा उसके गर्भ में पल रहा था। रीता ने बेटी रिमझिम को जन्म दिया। और उसे जीने का सहारा मिल गया। पति की मृत्यु के पश्चात् ससुराल वाले एकदम बदल गए। देवर की नज़र उस पर बेईमान हो गई और एक रात माँ-बेटी को घर से बाहर निकाल दिया गया। रोती बिलखती अपनी बच्ची को साथ लेकर अपने मायके पहुँच जाती है। रीता की माँ "डंके की चोट पर घोषणा करती है जब तक मेरी सांस है मेरी बेटी को कोई कुछ नहीं कह सकता।"[15] रीता को शहर नौकरी मिलती है तो माँ को चिंता होती है "फूल-सी बच्ची कहाँ धक्के खाएगी माँ का कलेजा बाहर आता पर रीता के हौंसले देखकर अश्वस्त हो जाती है।"[16] माँ चाहती है कि उसकी बेटी अक्षय के साथ ज़िन्दगी नए सिरे से शुरू करे। दोनों को इक्ट्ठे देखकर माँ की टूटी आशाएं फिर से कोपल बन जाती हैं।' इस प्रकार नारी का माँ का रूप बहुत महत्वपूर्ण है। "नारी के जननी रूप का समय और परिस्थिति से अधिक संबंध न होकर स्वयं अपने रक्त से संबंध है। इसलिए नारी ममता की प्रबल अनुभूति को जिस तीव्रता के साथ अनुभव करती है। उतनी तीव्रता के साथ पुरुष नहीं।"[17]

'रैली' कहानी में एक माँ का अपनी बेटी के प्रति विश्वास किन्तु समाज के प्रति शंका, डर, चिंता से भरा है। गौर शहर में एक रैली में शामिल होने के लिए

माँ से आज्ञा ले लेती है। माँ की शंका सही साबित होती है। शहर में गौर का यौन शोषण होता है। अपनी बेटी के जीवन को बर्बाद हुआ देखकर माँ का रो-रोकर बुरा हाल हो जाता है। गौरी बहादुरी के साथ इतने लांछनों को सहती है किन्तु "इतने सारे लांछनों के बाद भी उसने अपना लिखना पढ़ना नहीं छोड़ा था। मन में ठान ली कि अब उसे अकेले ही जीना है... आज भी दुर्गम गाँव में अकेली अपने पाले में शांत खड़ी गौरी एक अर्चनाद करती हैं, मैं मरुंगी नहीं... इस आज़ाद प्रवेश में ज़िन्दा रहकर अपनी उपस्थिति से सबकी यादों को ताज़ा रखेगी... तुम्हारी रैली दीदी।"[18]

लेखिका ने 'रैली' कहानी के माध्यम से बहादुर, बेबाक और समाज के सामने न झुकने वाली गोरी का चरित्र चित्रण करते हुए समाज में नारी जाति के लिए एक अहम स्थान निर्धारित करने पर बल दिया है।

'कालियाँ' कहानी के माध्यम से एक नारी का चित्रण उजागर हुआ है जो स्वयं अपने प्रेम को प्राप्त करने में असफल रही किन्तु अपने पुत्र के लिए वह चाहती है उसे उसकी पसंद जरुर मिले। असगरी और बाँके नहीं मिल पाए। असगरी अपने बेटे की शादी बाँके की बेटी से करना चाहती है। 'बाँकेर क्या अपनी बेटी देने का साहस कर सकोगे। मैं उसे अपने बेटे की बहू बनाना चाहती हूँ। बाँके भी पूरे साहस के साथ निडर होकर असगरी के बेटे नौशाद का हाथ ज़ोर से पकड़ लेता है। जो प्यार हम नहीं पा सके, उसे इन कलियों को तो सौंप सकते हैं... असगरी...।"[19]

'जख्म' कहानी में चार बेटों की मां के दुखद जीवन को चित्रित किया गया है। पति की मृत्यु के बाद जिस माँ ने अकेले ही चारों बेटों को पाल पोस कर बड़ा किया किन्तु जब बेटों का माँ के प्रति अपना कर्तव्य निभाने का समय आया तो बेटों ने माँ को चार भागों में बांट लिया। चार बेटों की मां को औरतें भाग्यशाली मानती थीं। "दीदी! तेरी कोख तो धन्य है। चार पूतों की माँ है। बुढ़ापा हाथों ही हाथों में सरक जाएगा। वह भी भूली नहीं समाती थी, डरती थी देवरानी-जेठानी की नजर से।"[20] माँ की भावनाओं को चारों पुत्रों में से किसी ने नहीं समझा। कोई उसके दुख, दर्द, पीड़ा, मनः स्थिति को नहीं जानता। माँ को वृद्धाश्रम में भेजने की बातें सुनकर माँ का मन व्यथा से भर जाता है। वह सब कुछ छोड़कर गाँव अपने देवर-देवरानी के पास वापिस लौट आई है।

'उजास कहाँ है' कहानी में एक गरीब माता-पिता अपनी बेटी की शादी जर्मीदार के पागल बेटे से कर देते हैं ताकि उसे खाली पेट ना रहना पड़े। "भर पेट खाना मिलता तो उसी में अपने को रानी समझने लगी। अभी तक दिन-रात सोने चांदी के ही लग रहे थे। कटोरा भर-भर दाल पीने को मिलती तो आंखें चौड़ी हो जाती थी। मायके के दिन मायूस कर जाते थे।"[21] खुशी कुछ दिन की ही थी। उसके भाग्य में। एक रात जेठ ने उसकी इज़्ज़त तार-तार कर दी। "अस्मत गंवाकर उसी घर में रही बस उसी क्षण एक ज्वालामुखी तो मेरे अंदर जन्म ले ही चुका था। उसे पालना भी था फिर तो मन में ठान ली यहीं रहकर बदला लूंगी।"[22] जयन्ती ने अपना बदला पूरा किया और उस राक्षस की गरदन धड़ से अलग कर दी। दुख था तो केवल इस बात का कि "जब-जब अपनी जेठानी का सूना माथा देखती तो कलपकर रह जाती। छोटे-छोटे बच्चे अपने पिता को ढूंढते तो मेरा दिल कतरा-कतरा हो जाता था। मुझे तो न्याय मिल गया पर उन्हें...।"[23] इसके बाद जयन्ती सब कुछ छोड़-छाड़ कर घर से निकल पड़ी और जयन्ती से जयन्ती माई बनकर तपस्या में जुट गई। कहानी के अंत में वह लेखिका से कहती है "जा बेटा! सांझ से पहले घर पहुंच जा, लड़की के लिए जमाना आज भी नहीं बदला है।"[24] अर्थात् लेखिका का मानना है कि समाज कितनी

भी प्रगति क्यों न कर ले, नारी की स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया है।

हिमांशु जोशी स्त्रियों के विषय में कहते हैं "वे हाड़-मांस की नहीं, कठोर पत्थर की बनी होती हैं, निरंतर संघर्ष करती हैं। निरंतर शोषित होती। मंजुला की रचनाओं में नारी की वह सघन व्यथा बड़ी गहराई से चित्रित हुई है। चाहे 'निपूती, 'आबरु' या 'बंधी कोख' हो अथवा 'उजास कहाँ है' हो या 'शहादत' सबकी अपनी-अपनी व्यथाएं हैं। अपने-अपने रुप रंग। अपने-अपने प्रश्न पर अनेक समाधान आज के इस त्रस्त स्वकेन्द्रित समाज में कहीं दीखते नहीं। इनमें 'कलियाँ' एक दूसरे धरातल की रचना है, आदमी आदमी के बीच खिंचती दीवारें। पर वह ही दीवारें जब दिलों में दरारें बनाकर उभरती हैं, तो फिर प्रश्न ही प्रश्न ही रह जाते हैं, समाधान देने वाले उत्तर नहीं। इन कहानियों में पहार की मिट्टी की सौंधी सुगंध है, ताजगी है। बनावट जा बुनावट नहीं। इसी सहज सरलता ने इन्हें एक नया आयाम । एक नई सार्थक पहचान दी है।

'उजास कहाँ है कहानी-संग्रह में मंजुला राणा ने नारी के विभिन्न रुपों को अलग-अलग रुपों से निखारा है। नारी जाति को खुला आसमान देने के पक्ष में है जहां वे अपने पंख फैलाकर मन-चाही उड़ान भर सके। आधुनिक समाज में विभिन्न परिवर्तनों के चलते नारी-मानसिकता में भी परिवर्तन आया है। शिक्षित होकर अपनी अस्मिता की पहचान के लिए उजास को तलाशने निकल पड़ी है। इस मार्ग में जगह-जगह पर विभिन्न अंतर्विरोधों, मुश्किलों, रुकावटों का सामना उसे करना पड़ रहा है। किंतु नारी को अपने अनेक रूपों और अपनी आकांक्षाओं में सामंजस्य स्थापित करते हुए निरंतर आगे बढ़ते रहना है और सफलता प्राप्त करनी है।

संदर्भ सूची :-

1. मंजुला राणा, 'उजास कहाँ है कहानी 'निपूती, पूर्वांचल प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2006, पृष्ठ सं. 7
2. वही. पू. 13-14
3. वही. पू. 15
4. वही. पृ. 7
5. मंजुला राणा, कहानी 'खून का रंग' पृ.16
6. वही. पू. 18
7. वही. पू. 17
8. मंजुला राणा, कहानी 'आबरु पृ. 21
9. वही. पू. 22
10. वही. पू. 24
11. मंजुला राणा, कहानी 'सिरहन पृ. 27
12. मंजुला राणा, कहानी 'शहादत' पृ. 28
13. वही. पू. 31
14. मंजुला राणा, कहानी बंधी कोख' पृ. 36-37
15. मंजुला राणा, कहानी 'सिन्दूर' पू. 41
16. वही. पू. 42
17. गणेश दास, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में नारी के विविध रुप, अक्षय प्रकाशन, कानपुर, सन् 1992, पृ. 173
18. मंजुला राणा, कहानी रैली पृ. 49
19. मंजुला राणा, कहानी कलियाँ पृ. 19
20. मंजुला राणा, कहानी ज़ख्म पृ. 58
21. मंजुला राणा, कहानी 'उजास कहाँ है पृ. 68
22. वही. पृ. 69-70
23. वही. पू. 71
24. वही. पू. 72

•